राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 246
दुश्मन नागराज

संजय गुप्ता पेश करते हैं

दुश्मन नागराज

वेदाचार्य भविष्यधाम में पानी की समस्या को हल करने के लिए राज ने बोरिंग कराई और बोरिंग के पाइप में से हंकारा नाम का एक राक्षस भी खिंच आया। नागराज ने उसका मुकाबला किया तो हंकारा ने जादुई शक्तियों से स्कूल की इमारत को जीवित कर दिया और बोरिंग मशीन लेकर जंगल की तरफ भाग गया। नागराज ने 'भवन जीव' को परास्त कर दिया और हंकारा के पीछे-पीछे जंगल में जा पहुंचा। उधर राजनगर में ध्रुव ने दो गहने के लुटेरों का पीछा किया लेकिन लुटेरे नदी में कूद गए। एक लुटेरा पकड़ा गया लेकिन दूसरा लुटेरा जादुई जल के सम्पर्क में आकर राक्षस बन गया। ध्रुव ने उसका मुकाबला किया और आखिरकार दो भंवरों ने ध्रुव और राक्षस छीछड़े को निगल लिया। भंवरें दोनों को स्वर्ण नगरी ले गईं जहां पर ध्रुव को जादुई पातालनगरी का रहस्य पता चला। नगरी को हंकारा के मालिक राक्षस विभत्सू ने बनवाया था और नगरी में पैर रखने वाला हर देव या इंसान राक्षस बन जाता था। लेकिन देवों ने नगरी को मंत्रित जल से भरकर विभत्सू के आतंक को खत्म कर दिया। यही मंत्रित जल निकलने से हंकारा आजाद हो गया था। विभत्सू भी आजाद हो रहा था। नागराज से जंगल में निपटने में विफल रहने के कारण हंकारा ने भूमिगत पाताल नगरी में भागने की ठानी और नागराज को भी अपने साथ खींचने लगा। इसी समय धनंजय और ध्रुव भी वहां पर आ पहुंचे और धनंजय स्वर्ण पाश के जरिए नागराज को अपनी तरफ खींचने लगा। दोनों तरफ जादुई खिंचाव होने के कारण नागराज, दो अलग-अलग नागराजों में बंट गया। एक स्वर्ण पाश में बंधा रह गया लेकिन दूसरा पाताल नगरी में खिंचता चला गया। अब आगे पढ़ें...

कथाः जॉली सिन्हा **चित्रः** अनुपम सिन्हा **इंकिंगः** विनोदकुमार **सुलेख एवं रंग सज्जाः** सुनील पाण्डेय **सम्पादकः** मनीष गुप्ता

हमको पाताल नगरी में जा रहे नागराज को ऊपर खींचना होगा! वर्ना नागराज फिर कभी एक नहीं हो पाएगा!
तभी-
ओह! इस नागराज ने मेरे हाथ को जकड़ लिया है! यह मुझको भी अपने साथ पाताल नगरी में खींचना चाहता है!
यानी ये वाला नागराज, पाताल नगरी के जादुई प्रभाव में आ गया है! तुम्हारा हाथ इससे छुड़ाना होगा!
वर्ना तुम भी इसके साथ पाताल नगरी पहुंच जाओगे!
मैं इस पर अपने ध्वंसक सर्पों का वार करके तुम्हारा हाथ छुड़ा देता हूं!
अरे! ध्वंसक सर्प क्यों नहीं निकल रहे हैं?

मैं 'स्वर्ण पाश' की मदद से तुम्हारा हाथ आजाद करा देता हूं!
ओह! इस नागराज की शक्ति के साथ पाताल नगरी की राक्षसी शक्ति भी जुड़ गई है! इसीलिए मेरा पाश भी इसको रोक नहीं पा रहा है!
और मैं अन्दर खिंचता जा रहा हूं!
अब जो कुछ भी करना है, वह मुझे ही करना होगा!
भाग्यवश इस नागराज ने मेरा हाथ मेरे ब्रेसलेट के ऊपर से पकड़ा हुआ है... अगर मैं इस ब्रेसलेट को खोल दूं...
क्रट
तो इसके ऊपर टिका हुआ नागराज का हाथ फिसल जाएगा, और मेरा हाथ आजाद हो जाएगा!
शुक्र है, ध्रुव! आखिरकार तुम अपनी अक्ल का इस्तेमाल करके ही आजाद हुए!
लेकिन तुम्हारी तबियत कैसी है, नागराज? कैसा महसूस कर रहे हो तुम?

मुझे तो कोई फर्क महसूस नहीं हो रहा है!... चिन्ता की बात सिर्फ यही है कि ध्वंसक सर्प मेरे बुलाने पर भी मेरे शरीर से नहीं निकले!

कहीं दूसरा नागराज तुम्हारी शक्तियां भी तो नहीं ले गया है! जरा चेक तो करना कि अभी कौन-कौन सी शक्तियां तुम्हारे पास हैं!

मैं फुंकार तो छोड़ सकता हूं, लेकिन विष की तरल फुहार नहीं छोड़ पा रहा हूं!

किसी भी सतह पर हाथ चिपकाकर तो चढ़ सकता हूं, लेकिन नागरस्सी मेरी कलाई से नहीं निकल रही है!

हालांकि सर्पों को दूसरे रूप में मैं छोड़ सकता हूं!
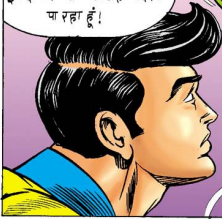
और... और मैं अपने शरीर को इच्छाधारी कणों में नहीं बदल पा रहा हूं!
कई खास सर्प भी मेरे शरीर में नहीं हैं। जैसे सौडांगी!... लेकिन शीतनागकुमार मेरे शरीर में अभी भी है!
तो तुम्हारी बाकी शक्तियां कहां गईं?
वे जरूर उस दूसरे नागराज के पास हैं, जो पाताल नगरी में खिंच गया है!
यानी सिर्फ नागराज ही दो भागों में नहीं बंटा है...
... इसकी शक्तियां भी दो भागों में बंट गई हैं! अब न जाने क्या गुल खिलाएंगी इसके दूसरे शरीर की शक्तियां!
दूसरे नागराज की शक्तियां अभी से गुल खिला रही थीं-
पाताल नगरी में-
सब झुक जाओ मेरे सामने! नागराज के सामने खड़े रहने की जुर्रत कैसे हुई तुम कीड़ों की?
ओफ्! झुक जाओ!
हम सिर्फ रक्षराज के सामने झुकते हैं! और रक्षराज वही होता है, जिसके हाथ में श्रृंगीभाल हो!

बता कहां है, शृंगीभाल ?
उधर! उधर है!
ये तू किस मुसीबत को यहां खींच लाया, हंकारा ?
म... मुझे इससे बचने का यही एक रास्ता समझ में आया!
अब मुझसे बचने का रास्ता सोच, मूर्ख!
पहले शृंगीभाल को तो बचाइए, रक्षराज! आज पहली बार किसी ऐसे राक्षस को देख रहा हूं, जिसमें उस शृंगीभाल को उठा सकने की क्षमता है! जिसे अब तक सिर्फ आप ही उठा सकते थे!
ओह! ये ठीक कहा तूने! शृंगीभाल जब मेरे हाथ में होगा, तो ये अपने आप मेरा गुलाम बन जाएगा!
लेकिन-
मेरे रास्ते पर क्यों दौड़ा आ रहा है? हट जा मेरे रास्ते से!
आsss ह! ये कैसी महक है, जो मेरा दम घोटे दे रही है!... जहरीली महक लगती है!

यह तो सीधा भृंगीभाल की तरफ दौड़ा जा रहा है! इसको रोकना होगा!
ओह! फर्श उछलकर मुझे पीछे फेंक रहा है!
यह तेरा काम है! तू मुझे रोक रहा है! कौन है तू?
मैं तेरा मालिक हूं! तेरा राजा! वैसे तो हर राक्षस बनने वाला अपने-आप ही मेरी शक्ति को महसूस करके विभत्सू को रक्षराज मान लेता है!
लेकिन तुझे जरा ज्यादा अच्छी तरह से समझाना पड़ेगा!
ऐसे!
आऽऽऽह! समझना तो तुझे है, विभत्सू!

और वह ये कि नागराज के रहते कोई दूसरा राजा बन ही नहीं सकता!
आऽऽऽह!
तू शक्तिशाली जरूर है नागराज! और पातालनगरी के कारण तुझमें राक्षसी गुण भी आ गए हैं। लेकिन फिर भी यह मेरी नगरी है! मेरा गढ़। तू यहां पर मुझको चुनौती नहीं दे सकता!

ओफ़ ! इसके जादुई बादल के कारण भारी- भारी खंभे, पिस्टन की तरह चल रहे हैं! हवा में उठकर मेरे शरीर पर गिर-कर मुझे दबा रहे हैं!... मैं इच्छाधारी कणों में बदलकर आजाद हो सकता हूं!... लेकिन फिलहाल ज्यादा जरूरी है विभत्सू को श्रृंगीभाल तक पहुंचने से रोकना!
इस भवन का यह हिस्सा उन तीन खंभों पर टिका है, अगर ये खंभे नहीं रहेंगे...
... तो भवन की छत भी जमीन से आ मिलेगी!
इस भवन के साथ-साथ विभत्सू भी धूल में मिल जाएगा! और फिर मुझे चुनौती देने वाला कोई नहीं बचेगा!
नागराज बन गया है...
...रक्षराज!
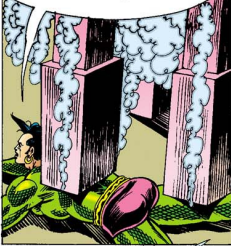
नहीं, तू नागराज है, और नागराज ही रहेगा!
तू... तू बच गया! अब कोई जादू नहीं! कोई सर्प शक्ति नहीं!
अब मैं तेरे शरीर को अपने वारों से तोड़ डालूंगा!
मर जाएगा तू! जिन्दा रहना चाहता है तो बता दे कि शृंगीभाल कहां है? दे, दे, शृंगीभाल मुझको?
आऽऽऽह!
वह... वह रहा शृंगीभाल! ले लो उसे!
लेकिन...
हा हा हा! अब तू मेरा गुलाम है! सब मेरे गुलाम हैं!
हां, रक्षराज! पूरी नगरी आपकी गुलाम है।
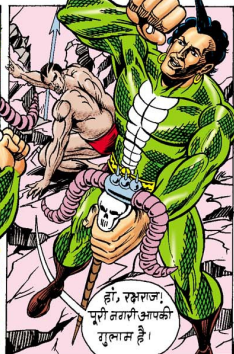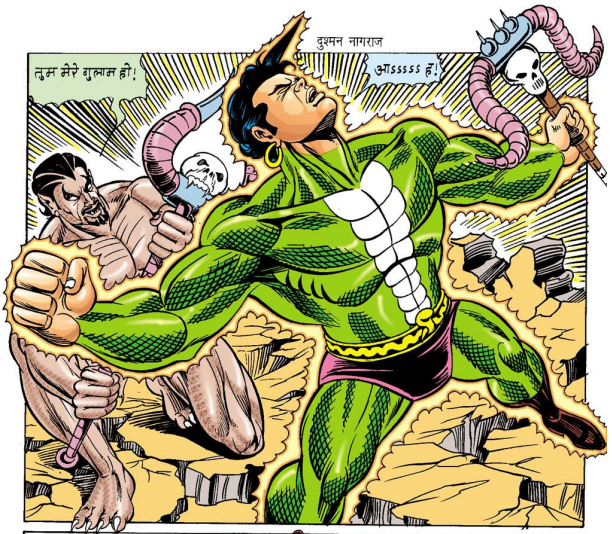
तुम मेरे गुलाम हो!
आऽऽऽऽऽ ह!
हा हा हा! तू शृंगीभाल नहीं पहचानता था, इसीलिए मैंने तुझको दूसरा दंड दिखा दिया था! असली शृंगीभाल तो यह है!
बधाई हो रक्षराज! आखिर आपने नागराज को गुलाम बना ही लिया!
हां! लेकिन छल से! वर्ना यह तो मेरी हड्डियों के साथ-साथ इस नगरी को भी तोड़ डालता!

इसको तो मैं बाहरी दुनिया में आतंक फैलाने के लिए भेजूंगा!
ओह! अकेले इसने ही इतना विनाश फैला डाला! अगर ये दो भागों में न बंट गया होता तो फिर क्या होता? प्रलय?
दूसरा भाग?
ये क्या बकवास कर रहा है तू?
यानी... आपको पूरी कहानी का पता ही नहीं है! सुनिए!
हंकारा, विभत्सू को पूरी कहानी सुनाता चला गया-
ओह! देव-मानव की जोड़ी! वे... तो षटपाद के साथ लड़ रहे थे! यानी... उन्होंने षटपाद को खत्म कर दिया!
खतरा है! उन तीनों को मरना होगा! वे तीनों इस जंगल से बाहर जिन्दा नहीं जाएंगे!
पाताल नगरी के ऊपर-
मेरा अपने दूसरे भाग से कोई संपर्क नहीं हो पा रहा है!
दूसरा नागराज अब तक ऊपर भी नहीं आया! इंतजार करना बेकार है!

हमको यह भूलना नहीं चाहिए कि हम पाताल नगरी के ठीक ऊपर खड़े हैं! विमत्सू कभी भी हमारे लिए मुसीबत खड़ी कर सकता है!
लेकिन नागराज का क्या होगा? उसके दूसरे भाग का और उसकी खोई शक्तियों का क्या होगा?
मैं देवों की सेना लेकर वापस आऊंगा, और इस पाताल नगरी को नष्ट कर दूंगा!
तब नागराज अपने आप ही आजाद हो जाएगा! और उसके दोनों भाग आपस में मिल सकेंगे!
अब, आओ!
लेकिन तीनों द्वार में घुस नहीं पाए-
अरे! अरे! हमको पकड़कर वापस कौन घसीट रहा है!...
ये... ये तो पेड़ की जड़ें हैं!
पेड़ की जड़ें तो सिर्फ मेरे अंग हैं!

वैसे कीजड़ के शरीर में और भी बहुत कुछ है!
ओह! मंत्रित जल के कीचड़ और जल को पिए हुए पेड़ों के मेल से बना एक प्राणी!
आह! लेकिन ये हमको क्यों मारना चाहता है?
ये नहीं, विभत्सू हमको मारना चाहता है! ये 'कीजड़' उसी की उपज है!

आऽऽऽ ह! ये तो हमको अजगर की कुंडली की तरह अपनी शाखाओं में लपेट रहा है!
और मेरे पास आजाद होने के लिए इच्छाधारी शक्ति तक नहीं है!
अस्त्र के नाम पर मेरे पास सिर्फ 'स्वर्णपाश' है! जिसका असर 'कीजड़' पर तो होने से रहा!
द्वार भी छोटा होकर बन्द होता जा रहा है! वर्ना मैं मदद यहीं पर मंगा सकता था!
स्वर्ण पाश तो तुम्हारे नियंत्रण में है न! उसके जरिए द्वार के पार से कोई शस्त्र मंगवा लो!
क्या कोई दूसरा देव ऐसा द्वार बनाकर नहीं आ सकता?
ऐसा कर सकने वाला यंत्र स्वर्ण नगरी में सिर्फ एक ही है! जो फिलहाल मेरे पास है!
गुड आइडिया! तब तक मैं हम सबको कीजड़ से आजाद करवाने की कोशिश करता हूं!

अगर ये सचमुच एक जीवित प्राणी है तो इसको दर्द का अहसास भी जरूर होगा! दर्जनों सर्पों के विषदंश और उनका विष इस पर असर जरूर करेगा!
और उसकी पकड़ ढीली होते ही-
आऽऽऽह! हम आजाद हो गए! धन्यवाद नागराज!
मेरा 'स्वर्ण पाश' द्वार के उस पार की स्वर्ण नगरी से एक अस्त्र भी ले आया है!
कीजड़ सचमुच तिलमिला उठा-
जो तीव्र ऊष्मा के गोले छोड़ता है! ये गोले कीजड़ के लकड़ी के अंगों को जला देंगे!
वैसे भी इस पर नागराज के सर्पविष का असर अभी तक है!
विष को मेरा तंत्र जड़ों द्वारा बाहर निकाल रहा है!

कहानी 19 पेज से जारी

और मेरे अन्दर भरा कीचड़ तेरी आग को बुझा देगा!
अब तेरा अस्त्र भी तेरे हाथों में नहीं रहेगा! और कोई दूसरा अस्त्र- शस्त्र तू मंगा नहीं पाएगा, क्योंकि अब तेरा 'द्वार' भी बन्द हो चुका है!
तो फिर तेरा अन्त मेरे विष से होगा कीजड़!
अब तेरे सांप ही मुझ तक नहीं पहुंच पाएंगे! उनका विष तो मेरे अन्दर पहुंचना दूर की बात है!
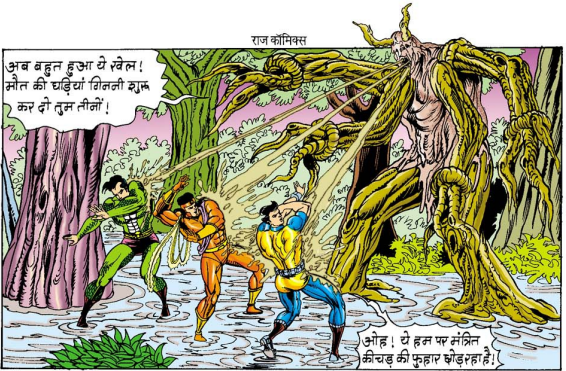
अब बहुत हुआ ये खेल! मौत की घड़ियां गिननी शुरू कर दो तुम तीनों!
ओह! ये हम पर मंत्रित कीचड़ की फुहार छोड़ रहा है!
और ये कीचड़ हमारे सारे शरीर पर फैलकर हमको ढक रही है!
इस गीली और चिपचिपी कीचड़ को हटाने के सारे प्रयास विफल हो रहे हैं!
अब थोड़ी ही देर में हमारा दम घुटना शुरू हो जाएगा!
क्योंकि कीचड़ हमारे मुंह और नाक को भी ढक चुकी है!
ओह! अब तो कोई भी नाग शक्ति मेरे शरीर से नहीं निकल सकती!
आऽऽऽह! मंत्रित कीचड़ शरीर पर अजीब सा असर कर रही है! सारा शरीर शिथिल होता जा रहा है!
आऽऽऽह! ये कीचड़ शरीर पर से हटानी ही होगी!
देखता रह हंकारा! तीनों मरेंगे, और तड़प-तड़पकर मरेंगे!
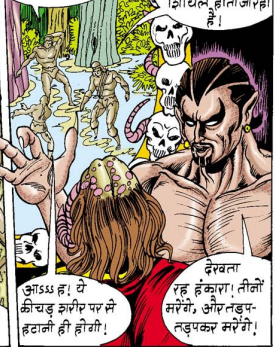
आऽऽऽह ! तुम क्या ढूंढ़ रहे हो ध्रुव ? यहां पर ऐसी कौन सी चीज है, जो हमारी मदद कर सके ?

तुम्हारा आग्नेयास्त्र! वह यहीं कहीं पर गिरा था !

मिल गया!

लेकिन इससे होगा क्या ध्रुव ? कीचड़ पर तो ये बेअसर है !

है ! लेकिन दूसरे पेड़ों पर तो असरदार है न!

तुमने तो जंगल में आग लगा दी ध्रुव! लेकिन इससे फायदा क्या होगा ?

इस आग में कूद पड़ो धनंजय, नागराज ! समझो कि ये आग भट्ठी है, और हम उस भट्ठी में पकने वाले मिट्टी के बर्तन !

आग हमारे शरीर पर लिपटे कीचड़ को सुखा कर सख्त करेगी!...

...और सख्त पर्त एक ही वार से कड़कड़ा कर टूट जाएगी !

कुछ ही पलों में तीनों कीचड़ के खोल से आजाद थे-

पाताल नगरी में-

ये... ये तो आजाद हो गए! कहीं ये कीजड़ को भी न खत्म कर दें! जल्दी ही कुछ सोचना होगा!

मैं बताऊं! इस नागराज को उनसे निपटने के लिए बाहर भेज दें रक्षपति!

मूर्ख! धनंजय अपनी शक्तियों से दोनों नागराजों को एक कर देगा! फिर हमारे हाथ लगा इकलौता नागराज भी जाता रहेगा!

क्यों न हम दोनों नागराजों के स्थान बदल दें! ऊपर वाला नागराज यहां बन्दी रहेगा और हमारा नागराज इन दोनों को खत्म करने के बाद, महानगरियों में विनाश फैलाएगा!

और फिर जब ऊपर वाला नागराज भी हमारे वश में आ जाएगा तो हम दोनों नागराजों को एक कर देंगे!

और फिर महाशक्तिशाली नागराज हमारा गुलाम होगा!

ख्याल तो तेरा अच्छा है! ऐसे हमारे गुलाम नागराज को सही समय पर आराम से आतंक फैलाने का मौका मिल जाएगा!
क्योंकि नागराज को सिर्फ नागराज ही रोक सकता है! और नागराज तो हमारे कब्जे में रहेगा!
लेकिन इस काम के लिए इन तीनों को अलग-अलग करना होगा! ताकि बाकी दोनों हमारे काम में अड़चन न डाल सकें!
और ऊपर-
कीजड़ भी हमारा पीछा करता हुआ जलते पेड़ों के इस घेरे के अन्दर आ गया है! यानी अब इसके शरीर का कीचड़ भी वैसे ही सूख जाएगा, जैसे हमारे शरीर का कीचड़...
... यानी इसका शरीर भी वैसे ही टूट जाएगा, जैसे हमारे शरीर पर चढ़े कीचड़ के खोल!

कीजड़ नष्ट हो गया! अब जो करना है, जल्दी ही करना होगा!
और अगले ही पल- ऊपर-
जमीन में दरारें पैदा हो रही हैं!
कीचड़ बना पानी दरारों से रिसकर नीचे जा रहा है! पर क्यों?
जमीन के टुकड़े टूटकर नीचे जा रहे हैं!
ओह! यह चाल हमको पाताल-नगरी में खींचने की है! बचो इससे!
ज्यादा मुश्किल नहीं है! पेड़ों पर लटककर हम बच सकते हैं!
मैं भी सर्प रस्सी छोड़ता हूं!
ओह! मैं तो भूल ही गया 'सर्प रस्सी' छोड़ने वाली शक्ति अब मेरे पास नहीं है!

विभत्सू, भाग्यवश कामयाब हो गया था-
नागराज गहराई में गिरता जा रहा था-
स्टार लाइन को पकड़ लो, नागराज!
मैं भी स्वर्ण-पाश फेंक रहा हूं!
और मैं भी दीवार से चिपकने की कोशिश करता हूं!
लेकिन कुछ भी कर पाने से पहले-
आऽऽऽह!
कुछ समझ पाने से पहले ऊपर वाला वह नागराज नीचे गिरता जा रहा था-
और राक्षस नागराज ऊपर चढ़ रहा था-

ओह! आखिरकार तुम बच गए नागराज! वर्ना पाताल नगरी पहुंचकर न जाने तुम्हारा क्या हाल होता!
मेरा हाल तो जो होना था, वह हो चुका है!
अब तो यह देखना है कि तुम दोनों का क्या हाल होता है?
आऽऽऽह! यह क्या कर रहे हो, नागराज?
सर्प रस्सी! यानी यह वो नागराज है, जो पहले ही पाताल नगरी में जा गिरा था! इस पर राक्षसी शक्ति का प्रभाव आ गया है, धनंजय!
हां! और जादुई शक्ति से बनी इस रस्सी को न जाने हम तोड़ पाएंगे या नहीं!
कोशिश करते रहो! तब तक मैं महानगर को धूल में मिलाकर आता हूं!

दूसरा नागराज स्थिति को अच्छी तरह से समझ गया था-
मैं अपने आपको पाताल नगरी पहुंचने से रोक नहीं सकता!
नीचे पहुंचते ही पाताल नगरी की राक्षसी शक्तियां मुझ पर हावी हो जाएंगी! मुझे बचने का यत्न करना ही होगा! पर कैसे? कैसे? ...
... एक शक्ति आजमाई जा सकती है!...
...सम्मोहन शक्ति!
इसके प्रयोग से राक्षसी शक्तियां मुझे मस्तिष्क के जरिए गुलाम नहीं बना पाएंगी!
लेकिन उसके लिए मुझे अपनी ही आंखों में देखना होगा! और यहां पर एक ही चीज ऐसी है, जो मुझे अपनी ही आंखें दिखा सके!
मेरी बेल्ट का धातुई सांप!
मैं अपने मस्तिष्क को आदेश देता हूं कि वह राक्षसी शक्तियों का हर संभव प्रतिरोध करेगा, और उनको अपने-आप पर हावी होने से रोके रखेगा!
नागराज के नीचे पहुंचते ही-
आ! मेरे गुलाम! आ!

झुककर पैर छू अपने मालिक विभत्सू के!
हा हा हा! शाबाश!
मैं तुम्हारे पैर नहीं छू रहा हूं विभत्सू!
बल्कि तुझे घुटने टेकने पर मजबूर कर रहा हूं! अपने सर्प छोड़कर!
देख हाल अपनी पाताल नगरी का!
भवन गिर रहे हैं! धंस रहे हैं! पर क्यों?
मेरे सर्प, पातालनगरी की नींव खोद रहे हैं! जल्दी ही तुम्हारी नगरी मिट्टी में मिल जाएगी, विभत्सू!
यानी... यानी तू मेरे नियंत्रण में नहीं है! पर... पर कैसे?
सोच, विभत्सू सोच!
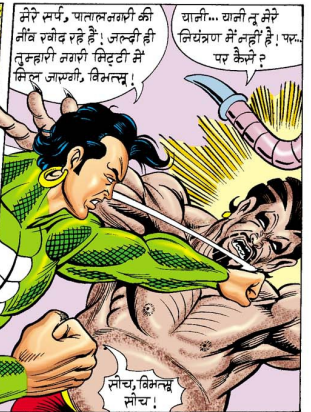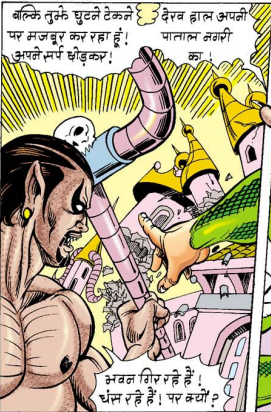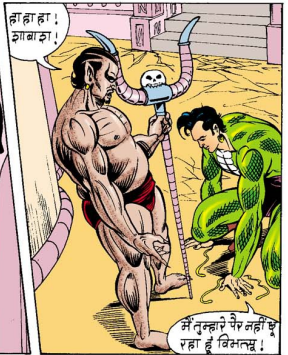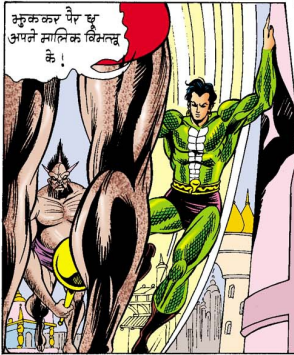
शृंगीभाल का स्पर्श होते ही तू मेरे वश में आ जाएगा, नागराज!
ऐसा है तो मैं ये खतरा उठाऊंगा ही नहीं! शृंगीभाल को तेरे हाथ में रहने ही नहीं दूंगा!
आऽऽऽह! पकड़ लो इसको!
मैं इसको अपना गुलाम बनाकर ही रहूंगा!
नागराज की फुंकार छूटी-
और-
राक्षस बेहोश हो-होकर गिर रहे हैं! यह नागराज तो पहले वाले से भी अधिक खतरनाक लगता है! इसको बन्दी बनाने के लिए कोई नायाब तरीका सोचना होगा!
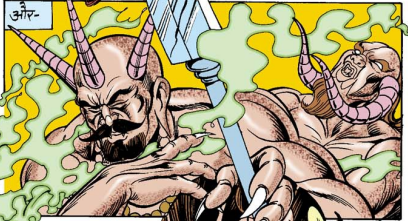
इसके दिमाग में घुसकर इसकी शक्ति का राज जानना पड़ेगा!... आऽऽऽह!
मुझे झटका क्यों लगा? शायद इसके दिमाग में कोई प्रतिरोधक शक्ति है!
अब क्या करूं?
कैसे रोकूं इस तूफान को? पाताल नगरी बर्बाद हो रही है! इसकी कोई न कोई कमजोरी तो होगी ही! आहा! हां! ये एक मानव है, और मानव की कमजोरी होती है, उसकी भावनाएं! दूसरों के प्रति उसका प्यार! जो हमारे अन्दर नहीं होता!
अभी इसको काबू में करने का नुस्खा लेकर आता हूं!
और कुछ ही पलों के बाद-
रुक जा, नागराज!
वर्ना तेरे साथी का सिर्फ धड़ बचेगा!
ध्रुव, तुम!
मैं बेबस था, नागराज!
इसीलिए यह मुझे सतह से यहां लाने में सफल हो गया!
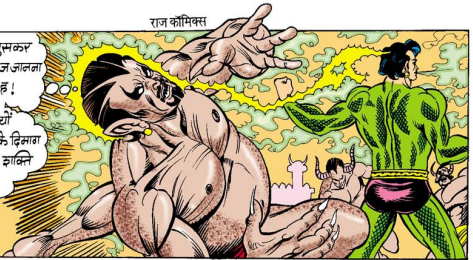
रोक दे अपनी विष फुंकार, और अपने- आपको मेरे हवाले कर दे, नागराज! वर्ना...
आऽऽऽऽऽऽऽ मेरी गर्दन!
रुको! छोड़ दो ध्रुव को! मैं... मैं अपने-आपको तुम्हारे हवाले करता हूं!
जल्दी ही-
अब तू अपने असली रूप में आ जा, राक्षस पोंटकी! हा हा हा हा!
यह क्या? ये... ये ध्रुव नहीं था!
धोखा दिया तूने मुझे!
यह तो हम राक्षसों का काम ही है, नागराज!
पहले वाले नागराज को भी मैंने ऐसे ही वश में किया था! और अब तुझे भी मैं वैसा ही राक्षस बनाऊंगा!

अब तक तो मेरे गुलाम नागराज ने उन देव-मानव की जोड़ी को खत्म कर दिया होगा! अब वह आज के महानगरों में जाकर आतंक फैलाएगा! और हम जनता को पाताल नगरी में पनाह देंगे!
और उनको भी राक्षस बनाकर अपनी आबादी को बढ़ाएंगे!
ऊपर-
नागराज तो हमको बहुत जबरदस्त कैद में जकड़ गया है! इससे जल्दी ही आजाद होना पड़ेगा! वर्ना उधर नागराज, लाखों महानगर वासियों की जान ले लेगा!...
... और इधर विभत्सू का कोई न कोई राक्षस आकर हमारी जान ले लेगा!
लेकिन इन सर्प बंधनों को खोलें तो कैसे?
तुम्हारा आग्नेयास्त्र! ये तुम्हारा कवच जला सकता है या नहीं?
नहीं!
तब तो हम आजाद हो सकते हैं!
आग्नेयास्त्र का वार सर्पों को जलाकर इस रस्सी को तोड़ देगा! और तुम आजाद हो जाओगे!
फिर ऐसे ही तुम मुझे आजाद कर देना!

कहानी 35 पेज से जारी

जल्दी ही-
आऽऽऽह! आजाद हो गए हम!
मैं अभी स्वर्ण नगरी जाकर मदद लेकर आता हूं! अरे!
यंत्र में कुछ खराबी हो गई है!
द्वार नहीं बन रहा है!
किसी दूसरे तरीके से तुमको स्वर्ण नगरी पहुंचने में समय लगेगा, और तब तक नागराज आधे महानगर को श्मशान बना डालेगा, और आधे को कब्रिस्तान!
अब हम पहले नागराज को रोकेंगे! आओ!
महानगर पर खतरा मंडरा रहा था-
मम्मी, देखो नागराज!
न्यू हेयरस्टाईल में है, नागराज! वाऊ!
काश, इस वक्त यहां पर कोई सुपर विलेन आ जाए, तो मैं नागराज को एक्शन करते हुए भी देख लूं!
फिलहाल दूसरे सुपर विलेन की जरूरत नहीं थी-
इस वक्त नागराज खुद ही एक सुपर विलेन बना हुआ था-

ओफ्फ!
भागो! नागराज पागल हो गया है!

नागराज का कहर बढ़ता ही जा रहा था-
यह तो नागराज है! यह कर क्या रहा है?
अब वह पानी में ध्वंसक सर्प छोड़ रहा है! पानी को भाप में बदल रहा है! पर क्यों?
पानी में अपने विष को मिला रहा है! इसका जरूर कोई अच्छा कारण होगा! नागराज कभी कोई गलत काम नहीं करता!
भाप हवा में ऊपर उठती चली गई-
और बादलों का रूप धारण करने लगी-
और फिर सांपों द्वारा हलचल पैदा करते ही-
महानगर पर 'विष-अम्ल' के बादल बरसने लगे-

ओह! सड़कें गल रही हैं! इमारतें गल रही हैं! जल्दी ही छिपने की जगह भी नहीं बचेगी!

फिर हम कहां जाएंगे?

जवाब आकाश से गूंजा -

इस मुसीबत से सिर्फ एक ही जगह तुमको बचा सकती है मानवों! पाताल नगरी! तुम्हारे सामने धरती का गर्भ अभी फूटेगा! वही रास्ता है पाताल नगरी का! चले आओ!

ओऽऽऽह!

किसी ने बादलों पर आग के गोले दागे हैं! बादल बिखर गए हैं! अब हम सुरक्षित हैं!

महानगर अब सुरक्षित ही रहेगा!

तुम दोनों? तुम आजाद कैसे हो गए?

इस आग्नेयास्त्र के जरिए!

तुमने नागराज की शक्तियों को ठीक से समझा नहीं है! वर्ना मुझसे टकराने की मूर्खता नहीं करते!
अब तू इस धरती से उठने वाला है!
ध्वंसक सर्पों के उस गुच्छे को स्टार लाइन ने बीच में ही रोककर-
आऽऽह! आग्नेयास्त्र गिर गया!
उसका रास्ता और निशाना, दोनों ही बदल दिए-
धड़ाम

आऽऽऽ ह!
इसकी स्वर्ण पाश में कसकर अपने वश में कर लो धनंजय!
मैं भी यही करने वाला था ध्रुव! अब नागराज का आतंक थम जाएगा!
अरे!
स्वर्ण पाश किसने पकड़ लिया?
मैंने!
मेरे रहते नागराज की मौत भी नहीं छू सकती!
आऽऽऽऽऽ ह!
तेरा स्वर्ण पाश अब नागराज के नागों के बीच में है! उठा सकता है तो उठा ले!
मेरे मानसिक आदेश पाश तक नहीं पहुंच रहे हैं! जरूर इन सर्पों में भी मानसिक शक्ति है, जो व्यवधान पैदा कर रही है!

और इनके बीच में हाथ डाल कर 'स्वर्ण-पाश' को उठाना कुछ खतरनाक लग रहा है! इनमें आ चुकी राक्षसी शक्ति के कारण इनके दांत मेरे कवच को फाड़कर विष मेरे शरीर में पहुंचा सकते हैं।
स्वर्ण-पाश को फिलहाल भूलना ही उचित है!
नागराज संभल रहा है! जल्दी ही कुछ करना होगा धनंजय!
मेरी मणि! इसका प्रयोग मैं अभी तक नहीं कर रहा था!
क्योंकि यह मणि 'स्वर्ण नगरी' से शक्ति सोखती है, और फिलहाल स्वर्णनगरी से हमारा संपर्क कटा हुआ है! लेकिन इसमें अभी भी अपनी थोड़ी-बहुत शक्ति मौजूद है! यह नागराज की राक्षसी शक्ति को काटकर उसको थोड़ी देर तक उलझन में डाले रहेगी! और नागराज वार नहीं करेगा!... उसी बीच में स्वर्ण नगरी जाकर मदद ले आऊंगा!
हम दोनों को ही जाना होगा धनंजय! क्योंकि मैं डॉल्फिनों से बात करके ऐसी सवारी का इंतजाम कर सकता हूं, जिससे हम जल्दी स्वर्ण नगरी पहुंच सकें! वर्ना तुमको स्वर्णनगरी पहुंचने में समय लगेगा!
ठीक है! फटाफट चलो!
हमको मणि का प्रभाव खत्म होने से पहले वापस भी आना है!
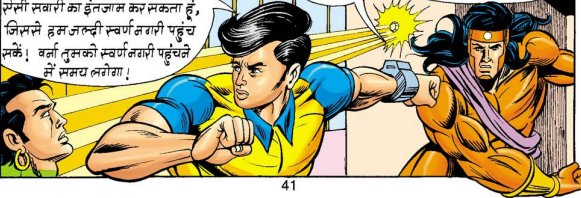
ध्रुव और धनंजय ने स्वर्ण नगरी तक का रास्ता तय करने में बिल्कुल भी समय नहीं गंवाया -
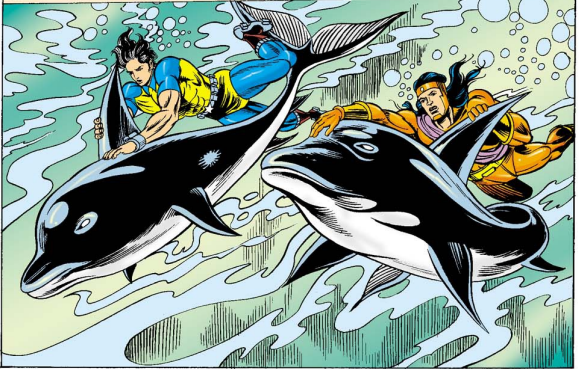
लेकिन उनकी यह जल्दबाजी किसी काम नहीं आई -

वो नागराज जो पाताल नगरी में जाकर खुद ही राक्षस बन चुका होगा? वह क्यों बचाएगा महानगर को उस दूसरे राक्षस नागराज से?
अगर ऐसा है तो भी नागराज को पाताल नगरी से बाहर निकालना ही होगा! ताकि वह फिर से एक होकर अपने ऊपर काबू पा सके!
नागराज अपने आप तो पाताल नगरी से बाहर आ नहीं सकता! उसको लाने पाताल नगरी में जाएगा कौन?
जो भी जाएगा, वह खुद भी राक्षस बन जाएगा!
मैं जाऊंगा, धनंजय! और मैं राक्षस भी नहीं बनूंगा!
यह कैसे संभव है?
संभव है! सिर्फ स्वर्णनगरी के विज्ञान को मेरी मदद करनी होगी!
पाताल नगरी में-
नदी की तरफ वाले द्वार की पहरेदारी करने में बड़ा मजा है!...
कोई मछली या मगरमच्छ आ जाए तो मारकर खा लो!
दबाकर खा लो! भर लो पेट को डबाडब! अभी तो खाने की बेहद कमी होने वाली है।
क्योंकि बाहर वाले कई मानव अब शरण लेने यहां पर आते ही होंगे!
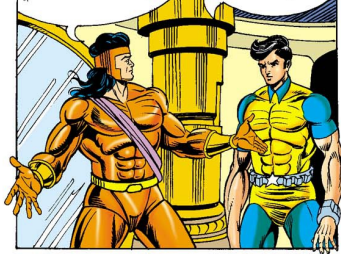
गलत ! पाताल नगरी की आबादी बढ़ने वाली नहीं, बल्कि घटने वाली है!
क्योंकि जब पाताल नगरी ही नष्ट हो जाएगी, तो इसकी आबादी तो खुद ब खुद खत्म हो जाएगी!
ये... ये कौन है ? यहां तक कैसे आ गया ?
य... यह तो नागराज का साथी है! आश्चर्य तो यह है कि इस पर पाताल नगरी के जादू का असर नहीं हो रहा है! क्यों ?
आऽऽऽह!

हमारे राक्षसी वार भी इस पर व्यर्थ ही रहे हैं!
हथियार से वार करो!
ये बहुत फुर्तीला है! वार बचा जा रहा है!
चाहे जितना फुर्तीला हो! लेकिन हमारा एक हाथ पड़ेगा, तो सारी हड्डियां एक साथ टूट जाएंगी!
सारी हड्डियां तोड़ने की जरूरत नहीं है! सिर्फ एक नस दबाना काफी है!...
डींक
...किसी को बेहोश करने के लिए!
कड़क
आऽऽऽऽऊ!

ये दोनों तो गए! लेकिन अब इस नगरी में नागराज को कहां पर ढूंढूं ?
वो रहा!
पकड़ो!
इसको उस तरफ मत जाने देना!
उधर इसका साथी कैद है!
बड़े मूर्ख हैं ये! मेरी मुश्किल को खुद ही हल कर दिया! अब उधर का रास्ता साफ करना है!
और ये काम मेरे सिग्नल फ्लेयर करेंगे! क्योंकि अंधेरी पाताल नगरी में रहने वाले राक्षस तेज रोशनी के आदी नहीं होंगे!
रास्ता साफ हो गया! अब आगे का प्लान नागराज तक पहुंच कर बनाऊंगा!

खबर, विभत्सू तक भी जा पहुंची थी-
गीदड़ों! उल्लुओं! एक मानव को नहीं संभाल पा रहे हो! थू है तुम्हारे राक्षस होने पर!
उसके हथियारों को मैं बेकार कर दूंगा! फिर पता करते हैं कि उस पर राक्षसी शक्ति असर क्यों नहीं कर रही है!
न जाने क्यों उस पर राक्षसी शक्ति के वार बेअसर सिद्ध हो रहे हैं! और वह हम पर मानवीय हथियारों के वार कर रहा है!
अगर दैवीय हथियार होते तो शायद हम उनको काट सकते थे! लेकिन मानवीय हथियार कैसे काटें?
ध्रुव, नागराज तक पहुंच गया था-
वह रहा नागराज! अभी तक वह सही-सलामत है! राक्षस नहीं बना!
लेकिन उसको घेरकर कई राक्षस खड़े हैं! नर्व गैस कैप्सूल का प्रयोग करता हूं! नागराज पर तो उसका असर होगा नहीं, लेकिन सारे राक्षस जरूर बेहोश हो जाएंगे!
लेकिन नर्व कैप्सूल निकाल पाने से पहले ही-
ओह! मेरी बेल्ट हवा में घुल रही है! ब्रेसलेट, शूरिंग्ज तथा स्केट्स भी गायब हो रहे हैं!

ओफ्! स्टार लाइन भी गायब... आऽऽऽऽ ह!
ये सारी चीजें अपने-आप गायब नहीं हो रही हैं!
... बल्कि मैं इनको गायब कर रहा हूं!
हां, राक्षसों! अब पकड़ लो इसको!
हा हा हा! बड़ा साहसी है तू! नागराज को आजाद कराने आया था? लेकिन नागराज के बंधनों को सिर्फ ये शृंगीभाल ही तोड़ सकता है!
और इसको तू हासिल नहीं कर सकता!
कर सकता हूं! तू इसको छोड़ेगा, और मैं इसको पकड़ूंगा!
तड़ाक
ये नागराज इसको एक बार मेरे हाथ से गिरा चुका है! तबसे मैंने इसको अपने हाथ से चिपका लिया है! इसको कोई राक्षसी शस्त्र काट नहीं सकता, और तेरे पास मानवीय शस्त्र है नहीं! इसलिए तू शृंगीभाल पर से ध्यान हटा! और बता कि तुझ पर राक्षसी शक्तियों का असर क्यों नहीं हो रहा है?
नदी के तल में तैर रहे उस मंत्रित जल के कारण, जो इस नगरी में भरा था, और जिसमें राक्षसी शक्तियां सोखने के गुण हैं! मेरे शरीर के ऊपर देव ऊर्जा की एक पर्त चढ़ी हुई है, जिस पर वह उस पानी की पर्त चिपकी है!
और वह पर्त राक्षसी ऊर्जा को सोख रही है!
हां! और इसी 'जल-कवच' को पहनकर देवों की सेना भी अब पाताल नगरी में प्रवेश करने ही वाली है!
ओह! बड़ा शैतानी दिमाग है इस मानव का! बांध दो इसको भी!
ये और नागराज बंधक बनकर हमारी नगरी को बचाएंगे!

ओफ्! अगर हम बंधक बन गए तो सचमुच पूरी देव सेना बेबस हो जाएगी! नागराज को आजाद कराना बहुत जरूरी है! वह एक बार आजाद हो गया तो पूरी राक्षस सेना से निपट लेगा! लेकिन नागराज को आजाद कैसे करूं?
आहा! किस्मत मेरे साथ है!
अगले ही पल- ध्रुव का कलाबाज शरीर मछली की तरह राक्षसों की गिरफ्त से फिसल गया-
और-
अरे! अरे! मेरा शृंगीभाल कट गया! कैसे? यहां पर ऐसा कौन सा हथियार आ गया, जो इसको काट सके!
कट्टाट
ये हथियार! मेरा वह ब्रेसलेट है जो पहले वाले नागराज के साथ पाताल नगरी में आ गिरा था! किस्मत से यह मुझे यहां पर पड़ा हुआ दिख गया!
ओह! शृंगीभाल का नागराज से स्पर्श हो गया है... और नागराज आजाद हो गया है!
रक्षराज! रक्षराज! नदी द्वार की तरफ से देवों की सेना अंदर आ रही है!
ओह!

हम देवों की मदद करेंगे यह लड़ाई जीतने में!
नहीं, नागराज! यह लड़ाई तो बहुत समय तक चलेगी! फिलहाल तो हमको महानगर पहुंचना है! जहां पर तुम्हारा दूसरा राक्षसी रूप कहर बरसा रहा है!

ठीक है! बताओ, तुम किधर से पाताल नगरी के अन्दर आए थे?
उधर से बाहर जाना अब संभव नहीं है!

क्योंकि वह जगह अब देवों और दैत्यों की भी लड़ाई का मैदान बन चुकी होगी! हमको उधर से जाना होगा, जिधर से तुम नीचे गिरे थे!
ठीक है! तुम मेरी पीठ पर चढ़ जाओ!
हम पाताल नगरी की दीवार पर चढ़कर पहले उस छेद तक पहुंचेंगे, और फिर बाहर निकलेंगे!

ओह! सही समय पर निकल आए! वर्ना अब मेरा वह स्व-सम्मोहन भी टूट रहा था, जो राक्षसी शक्ति का प्रतिरोध कर रहा था!

ओह! महानगर में फिर से बारिश हो रही है! ये जरूर 'विष-अम्ल' की बारिश ही होगी।
यानी दूसरा नागराज संभल चुका है!
विष अम्ल की वर्षा?
दूसरा नागराज अपने विष के बादल बनाकर उसको महानगर पर बरसा रहा है!
अब समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए! आओ, नागराज!
"हमें महानगर को बचाना है-"
कोई नहीं बचेगा! जो यहां पर रहेगा, नहीं बचेगा! बचने की एक ही जगह है...
...पाताल नगरी!
धरती में बने उस छेद में कूदते जाओ! वह रास्ता तुमको पाताल नगरी तक ले जाएगा... और सुरक्षित रखेगा!

पाताल नगरी तो अब असुरों तक के लिए सुरक्षित नहीं है! मानवों के लिए तो मैं महानगर को ही सुरक्षित कर दूंगा! तुमको अपने अन्दर मिलाकर!
ओह! तो तू मुझे रोकने आया है!
लेकिन मैंने विष अम्ल की जो ये बारिश दुबारा शुरू की है, उसको रोकने की शक्ति तेरे पास है ही नहीं!
मेरे सर्प, एक सर्प आवरण का निर्माण कर देंगे जो महानगर वासियों को बादल खत्म होने तक घातक वर्षा से बचाए रखेगा!
और ऐसा करने से तेरे शरीर के सर्प भारी मात्रा में बाहर निकलेंगे!...
... और तू कमजोर होकर मेरे हाथों से पिटने लगेगा!
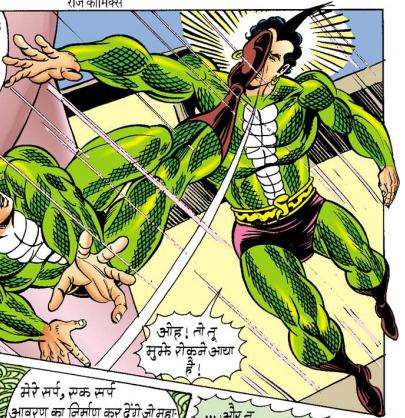
ओह! मुझे सांप छोड़ना रोकना पड़ेगा! लेकिन फिर ये अम्ल विष की बारिश कैसे रुकेगी?

इसको मैं रोकूंगा नागराज!
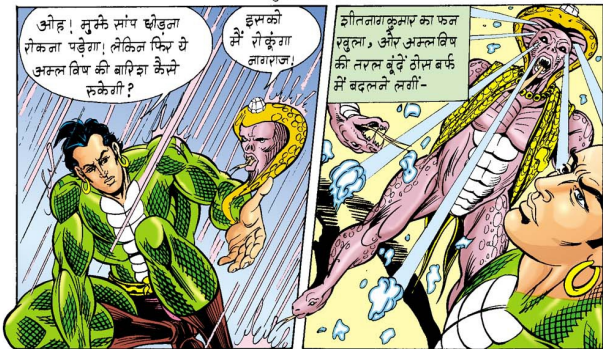
शीतनागकुमार का फन खुला, और अम्ल विष की तरल बूंदें ठोस बर्फ में बदलने लगीं-

और हवा के झोंके, बर्फ के उन तैरते फाहों को समुद्र की तरफ उड़ा ले गए-

अब महानगर सुरक्षित है!

लेकिन तुम सुरक्षित नहीं हो, राक्षसी नागराज!

सौडांगी के सामने बढ़-चढ़ कर मत बोल शीतनागकुमार! पिरामिडों की रहस्यमय शक्तियां मेरे साथ हैं जो तेरी शीत शक्तियों का मुकाबला करेंगी!

शीतनागकुमार का फन जब खुलता है तो किसी भी वार को सोख सकता है!
यही मैं चाहती हूं! सोख मेरी पिरामिडतरंगों को, और सुई चुभे गुब्बारे की तरह फटजा!
सौडांगी और शीतनागकुमार के टकराव के साथ-साथ दोनों नागराजों का युद्ध और भयंकर हो गया था-
तुझे मार कर तेरी सारी शक्तियां मैं हासिल कर लूंगा!
लेकिन मुझे सिर्फ अपनी खोई शक्तियां ही नहीं, बल्कि अपना खोया वह आधा शरीर भी चाहिए जो फिलहाल तुम्हारे पास है!
नागराजों का युद्ध तेज होता जा रहा था-

और साथ ही साथ देव और दैत्यों का युद्ध एक परिणाम पर पहुंचता जा रहा था-
ध्रुव ने हमको गजब का तरीका बताया, धनंजय! राक्षसी शक्तियां, मंत्रित जल के कवच के कारण हम पर असर नहीं कर रही हैं!
हां! लेकिन ध्यान रहे! एक भी राक्षस की जान न जाए! क्योंकि ये वास्तव में वे मानव हैं, जो पाताल नगरी के कारण राक्षस बन गए हैं! हम इनको फिर से मानव बना देंगे! इनको सिर्फ बन्दी बनाओ!
ओह! देवों के अप्रत्याशित हमले ने हमको पूरी तरह से मात दे दी है! लेकिन अभी भी मेरे पास एक ऐसा मोहरा है, जो पूरी देवसेना को नष्ट कर सकता है!
नागराज! मुझे उसको महानगर से वापस लेकर आना होगा! जल्दी से जल्दी!
विभत्सू कहीं नजर नहीं आ रहा है!
जाएगा कहां? यहीं कहीं छिपा होगा कायर!
देर-सवेर मिल ही जाएगा! बाहर जाने के सारे रास्ते बन्द हैं!
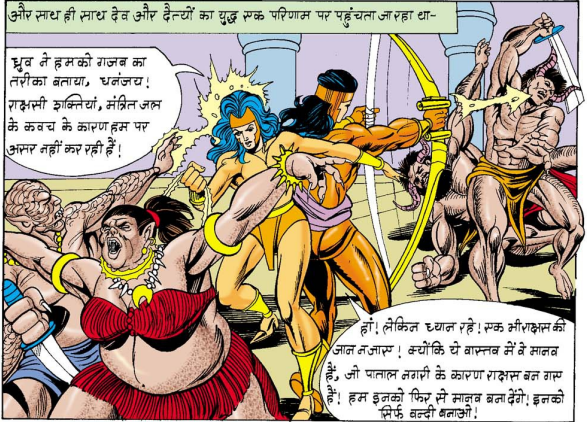
विभत्सू यहां पर आ रहा था-
जहां दोनों नागराजों का युद्ध महानगर पर कहर बरसा रहा था-
कहीं तुमने नागराज को यहां पर लाकर भूल तो नहीं की है ध्रुव ? अगर राक्षसी नागराज जीत गया...
...तो फिर यह दुनिया ही खत्म हो जाएगी!
नागराज की मदद चाहिए! लेकिन यहां पर ऐसी कौन सी चीज है जो राक्षसी ऊर्जा से लड़ सके!
यस! एक चीज तो है!
जल्दी ही-
हां! धनंजय का पाश अब तक यहीं पड़ा है! लेकिन इसको नागों के पहरे से निकालूं कैसे ?
स्टार ब्लेड्स को तो ये फुर्ती से मुंह में पकड़ ले रहे हैं!
इनसे तो इनके जैसे सांप ही लड़ सकते हैं! पर वे आएंगे कहां से ?
कहां जा रहे हो, ध्रुव ? क्या याद आ गया तुमको ?
याद आ गया! महानगर में तो नागराज के जासूस- सर्प चप्पे- चप्पे पर फैले हुए हैं! नागराज उनसे मानसिक संकेत द्वारा संपर्क करता है! मुझे भी कुछ ऐसी ही कोशिश करनी होगी! हे भगवान! मेरी कोशिश को सफल करना!

ध्रुव की प्रार्थना और प्रयासों का जवाब जल्दी ही आ गया-
जासूस सर्पों के रूप में-
ओह! सर्प सेना आ गई, और बुलाने का कारण भी समझ गई है!
ये दूसरे नागराज के राक्षसी सर्पों को खदेड़ रहे हैं!
अब मुझे नागराज की मदद करनी होगी! स्वर्ण पाश से राक्षसी नागराज को गुलाम बनाकर उसको काबू में करना होगा!
लेकिन अब काम इतना आसान नहीं रह गया था-
क्योंकि राक्षसी शक्तियां दुगुनी हो गई थीं-
हा हा हा! मैं आ गया हूं! अब दबोच ले इस नागराज को, और एक हो जा! फिर हमको देव सेना को परास्त करने चलना है!
ओह! अब मेरी आधी शक्ति तो विभत्सू की राक्षसी ऊर्जा से लड़ने में जा रही है... और यह नागराज मुझ पर भारी पड़ता जा रहा है!
हम दोनों के शरीर एक हो रहे हैं! और राक्षसी शक्तियां मुझ पर हावी हो रही हैं!
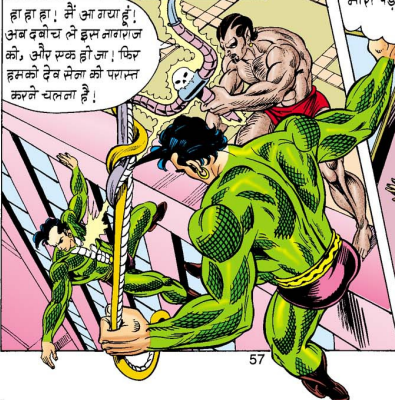
तभी-
बस! अब असुरी शक्तियां भी 'स्वर्ण-पाश' की गुलाम हैं! ये तुम पर हावी नहीं हो पाएंगी नागराज!
अब तुम राक्षसी नागराज को अपने अन्दर खींचने का प्रयत्न करो!
नहीं! ऐसा नहीं होगा! नहीं होगा ऐसा! असुर पाश राक्षसी नागराज को अलग खींच लेगा!
ओह! इसकी शक्ति मुझसे कई गुना ज्यादा है! यह दोनों नागराजों को अलग-अलग करने में सफल हो जाएगा! ...आऽऽऽ ह!
ऐसा नहीं होगा, ध्रुव! अब मैं भी तुम्हारे साथ हूं!
धनंजय, तुम आ गए!
हां, ध्रुव! मैं तो पाताल नगरी को नष्ट करने के बाद अपना पाश लेने यहां आया था! किस्मत से विभत्सू भी यहीं मिल गया!
अब नागराज बचेगा...
...और विभत्सू नष्ट होगा!

हमारा प्रयास दोनों नागराजों को एक करना है! और उसमें हम विफल हो रहे हैं! ऐसे तो दोनों नागराज अलग-अलग ही रहेंगे!
फिर क्या करें, ध्रुव?
स्वर्ण-पाश को ढीला छोड़ दो! जल्दी!
स्वर्ण-पाश को ढीला छोड़ते ही, सारा खिंचाव एक ही दिशा में केन्द्रित हो गया-
और इस जोरदार झटके से नागराज के दोनों शरीर एक हो गए-
विभत्सू खुद स्वर्ण-पाश की कैद में था-
नागराज को राक्षसी शक्ति से आजाद करो, विभत्सू!
और इस 'झटके' से संभल पाने से पहले ही-
उसकी आवश्यकता नहीं है, धनंजय! राक्षसी शक्ति वाला नागराज मेरे अन्दर समा चुका है! अब सम्मोहन द्वारा स्वयं को दिया गया मेरा आदेश उन शक्तियों को काबू में रखेगा!
तब तक, जब तक वे खुद पूरी तरह से नष्ट नहीं हो जातीं!
और विभत्सू को हम काबू में रखेंगे!
इसके भाई राक्षस चंडकाल के साथ-साथ!
समाप्त.